महाभारतीय-संस्कृतिकोशः

रामजी उपाध्यायः



महाभारतीय-संस्कृतिकोशः

रामजी उपाध्यायः

प्रकाशकः

भारतीय-संस्कृति-संस्थानम्

महामनापुरी, वाराणसी–५

(काशी-हिन्दू-विश्वविद्यालयः)

थमं संस्करणम् १९८२ ई०

प्रकाशकः वितरकश्च

भारतीय-संस्कृति-संस्थानम्

महामनापुरी (काशी-हिन्दू-विश्वविद्यालयः)

वाराणसी -५

मूल्यम् २५ रूप्यकाणि

मुद्रक : महाकान्त प्रेस, रेवड़ी तालाब, वाराणसी ।

भूमिका

महाभारतीय-संस्कृतिकोशो महाभारते निदर्शितां भारतीयसंस्कृतिं विज्ञातुकामाना-मुपयोगाय प्रकल्पितः। इयं संस्कृतिर्नहि विशिष्टयुगस्य विशिष्टजनस्य वा प्राभृतिको निधिः, वरं देशकालानन्त्यजुषां लोकानां शतशः सांस्कृतिकशाखा-प्रशाखा विवृण्वती च शश्वत् प्रतिभाति। तत्र मानवीयौदात्त्योत्कर्षपराणां विचारसाराणां मौक्तिकसरो नव-नवोन्मेषप्रतिभावतां ज्ञान-विज्ञानधियोऽलङ्कर्त्तुं प्रतिष्ठते। तत्र च परवर्ति-सांस्कृतिक-प्रवृत्तीनां मूलं गवेषयितुं शक्यते।

अस्यां दिशि महाभारते कञ्चित् सांस्कृतिकविषयमवलम्ब्य कुत्र किं वर्णितमित्य-पेक्षा सर्वातिशायिनी वर्तत एव। इयमस्माकं कृतिरनुसन्धानव्रतानां विदुषां तदेव प्रयोजनं निष्पादयितुमनुष्ठितम्। अत्र महाभारतीय-संस्कृतिप्रकाशपुञ्जानां महिमभरपदानामनु-क्रमणिका सङ्गृहीता।

कोशेऽस्मिन् महाभारतेऽप्राप्तान्यपि कतिपयपदानि सङ्कलितानि सन्ति। यद्यपि तानि पदानि नामतो न सन्ति महाभारते, किन्तु तेषां सांस्कृतिकाभिव्यक्तिर्भूयसाभिनिवेशिता व्यासेन। तदेतत् काञ्चिद्विशिष्टां सांस्कृतिक-प्रवृत्तिं स्पष्टयितुमेवोरीकृतम्।

भारतीयैर्वैदेशिकैश्च विद्वद्भिर्वैज्ञानिकदृष्ट्या सम्पादितं पुण्यपत्तनस्य भण्डारकर-प्राच्यविद्याशोधसंस्थानेन प्रकाशितं महाभारतमेव पर्वाध्यायश्लोकादीनां निर्देशनार्थं कोशेऽस्मिन् स्वीकृतम्। तद् द्विविधं प्रकाशितम्—प्रथमं तु बृहत्कायं पाठविषयक-टिप्पणीयुतं मूलपाठादिसंशोधकानामुपयोगाय कृतम्, अपरञ्च लघुकायं संस्करणं साधारणपाठकानामभ्यासायोपयोगि।

कोशोऽयं भारतीयसंस्कृतिगवेषकान् भृशमुपकरिष्यतीति विश्वसिमः। एतादृशस्य कोशस्याभावेऽद्यावधि सांस्कृतिक-पदानामभिप्रायाधिगमनं दुस्साध्यमेवासीत् तेषां विविधप्रसङ्गेषु प्रयोगाभिव्यक्तेः सममेवानाकलनात्। भारतीयसंस्कृतिमधुव्रतानां पाथेयं स्यादयं कोश इत्याशास्ते।

उपाध्यायः श्रीरामः

रामनवमी २०८३ वि. स.

महामनापुरी, वाराणसी—५ (B.H.U.)



Preface

The Mahābhāratīya-Sanskriti-Kośa has been designed to serve as an aid towards an understanding of Indian culture as visualised in the great epic, the Mahābhārata. The epic culture does not relate to some particular years or races only. As a matter of fact, it unfolds hundreds of cultural currents and crosscurrents of peoples separated not only by space but also by time, punctuated by thousands of years in some cases. One finds here in a conglomeration of the gems of cultural thoughts which he needs to substantiate or illustrate his point of view as also to investigate the roots of later cultural trends.

For all this it has been imperative to know as to what is written and where in the Mahābhārata. The work in hand largely meets this demand of scholars and researchers. It is an alphabetically arranged index of words having important cultural significance.

Sometimes a word, given in the index, does not actually occur in the Mahābhārata. Such a word simply represents some cultural concept which has been given name and indexed . It has been done with a view to helping the reader to find out for himself the details of associated ideas around a concept.

Amongst the various editions of the Mahābhārata the most scientific so far is the one edited by a competent editorial board of eminent Indologists all the world over under the aegis of the Bhandarakar Oriental Research Institute, Poona. References have been noted from this edition.

The Mahābhārata of the B. O. R. I. was originally publishhed in several big volumes with textual annotations largely con-

tributing to the size of it. This edition had been very useful for researches centred round the textual development of the epic. For general readers, owing to its size, it is cumbersome and unhandy. Thanks to the management of the B. O. R. I. which has now published the bare text of the Mahābhārata without the textual annotations in small handsome volumes for ready reference.

I hope the present index will considerably facilitate the task of researchers on Indian culture in having an access to the pertinent standpoint and implications which could not be so far possible otherwise.

April 2 1982 Ramji Upadhyaya
Mahamanapuri Varanasi-5
(B. H. U.)

विषय-सूची

महाभारतीय-संस्कृतिकोश

अ

अंशावतरण आ. २.७६

अकर्म भी. २४.४७

अकर्मा आर. ३३.३

अकार (त्रयोदश) शा. १५६.२२

अकार्य आर. ६२.३८

अकल्ल आ. १६३. १६

अकिञ्चन (प्रशंसा) शा. १७०. ७

अकीर्ति भी. २४. ३४

अकुतोभय आ. १. ७९

अकुल उ. ३६. २५-२७

अकृष्टपच्या शा. २१६. १६

अक्रिय भी. २८. १

अक्रोधन आ. ७४. ६

अक्ष स.४९. ८

अक्षतपात्र द्रो. ५८. २०

अक्षयवट आर. ८२. ७२; ९३. १३

अक्षर भी. २५. १५

-ब्रह्म आ. ५७. ८४

-लोक शा. ६२. ७

अक्षौहिणी आ. १. ११६; २.१५-२३
उ. ५६. ४

अगस्त्य आर. १७८. ३७

-सर आर. ८०. ६३

अगस्त्याश्रम आर. ९४. १

अग्नि आर. २६१. १-३१ उ. १६.
१-८

-कवि आ. ५. २३

-दाह क. ५८. १५

-पुरीरक्षक स. २८. ३४

-प्रकाराः आर. २०९. १-२५

-प्रवेश आ. १६६. ४२

-वेश्य द्रो. ६९. ६६

-शरण ५. १७

-सर्वभक्ष आ. ६. १३; ७. ११

-होत्र आ. ७. ६; आर. १८४. १२

अग्रप्रदायी उ. १३३. ३२

अग्रभोजन शा. ३२२. २४

अग्रहार आर. ६५. ३; २२२. ४३;आश्र.
२. २

अघ्न्य सौ. ६. २१, २२

अङ्क आर. २२९. ४

अङ्गद उ. १५०. १९; भी. १७. १७

अङ्गना (अनावृता) आ. ११३. १४

अङ्गारकर्मान्त शा. १४२. ३०

अङ्गुलित्राण आर. २६७. १७

अचल-व्यूह भी. १९. ७.

अजगर-चरित शा. १७२. ३७

अज (बीजं, न पशुः) शा. ३२४. ४

अजातशत्रु द्रो. ७८. ३९

अज्ञान शा. १५३. ३; भी. ३८. १५

अञ्जलिक द्रो. ३७. २२

अट्ट आर. १६. ६

अट्टालक आर. १६. ६; १७०. ३

अणिमा शा. ३००. १३

अण्ड आ. १. २७

-भक्षण स. ३८. ४०

अतपा (निष्कल) शा. ३०६. ४१

केशाकेशि-युद्ध आर. २६८. ३६
केषां विनिपातः उ. ३६. ५९
कैकेयी अ. १२४.
कैञ्चन्य शा. ३०८. ५०
कैतव स ५४. १
कैलावतमधु द्रो. ८७. ६१
कैलास आर. १७४. २–५
कोटितीर्थ आर. ८१. १४
कोद्रव अ. ९१. ३८
कोश शा. ११९. १६; १३१. १
-वर्धन (कर) शा. ६७. १३
कोष्ठागार शा. ११९. १७
कौटुम्बिकजीवन शा. २२१. ७२
कौटुम्बिकसौहार्द आ. ११६. १–२६; १४७. १–११
कौतुक शा. ७. १४
-मङ्गल उ. १४९. ३७ क. १. ११
(सूत्र) आ. १४३. १७
कौतूहल (स्त्रीणाम्) शा. ३१५. २०
कौमुदी (अकाल) आ. २०१. २९
कौमोदकी आ. २१६. २५
कौरव (दैत्यपक्ष) आर. २४०. २४
क्रकच (वाद्य) भी. ४१. ३
क्रियापथ शा. १२०. ५२
क्रियाभ्युदय श. ३०. ८, ९
क्रियायज्ञ सौ. १८. ५
क्रियाविधि शा. १३८. २५
क्रीडनक आर. ३१. ३६
क्रीडनीय (मूर्ति–वराह, महिष, कुक्कुट, मेष, गो, छाग, पुष्प, फल, शाकु, रथ, भुजङ्ग, सिंह, व्याघ्र, द्वीपी, छत्र) अ. ८६. २०–२५
क्रीडा (पक्षिभिः) शा. १३७. ५६
क्रीडित द्रो. ३७. २
क्रोध आ. ३८. ७, ८; ७४. २–६; आर. ३०. १–३५; १९७. ३१
क्रौञ्चद्वीप शा. १४. २२
क्रौञ्चव्यूह द्रो. ६. १५
क्लीव शा. १४. १३
क्षण स. ११. २७
क्षत्ता वि. ६३. ५२; उ. ३२. ३
क्षत्र आ. २. ३; शा. २२. ६; ५६. २४
-कर्म भी. ४०. ४३
-जीविका (निन्दित) भी. ९२. ९
-धर्म आ. ९६. २९; द्रो. ३२. २२; श. ६. ३५; १८. ६०; शा. १०. ७; १४. १६
क्षत्रधर्म (लोकज्येष्ठ) शा. ६४. २५
क्षत्र-लक्षण शा. १८१. ११
क्षत्रिय आ. १२७. ११; १६५. २८; आर. २८. ३४, ३५; उ. ७३. २३; १३३. ११, १२; शा. २२. ३–५; ५९. १२८
(अध्ययन) आ. २१३. ८१
(अविश्वसनीय) शा. १३७. १४
(आदर्श) आर. २९७. ३३
(आदित्य) शा. २०१. २२
(क्षतात् त्राता) उ. १३०. २९ शा. २९. १३०
(चातुर्वर्ण्यस्य गोप्ता, संग्रहीता, दाता) क. २३. ३३

'घ'

'च'

'द'

'ध'

ब्रह्मवृक्ष शा. ७४. १४
(जीवानामा जीवः) आश्व. ४७.१३
ब्रह्मशिर आ. १. १५; सौ. १५. २३
ब्रह्मशिरा सौ. १२.४
ब्रह्मसर अ. ९६.७
ब्रह्मसूत्र द्रो. ६९.६९
ब्रह्मस्थान शा. १९२.१२३; २२२.२
ब्रह्महण उ. ३५.४१
ब्रह्महत्या आ. ३३. १९; ७१. ३९; आर. १३९. १०; उ. ९. ३०
ब्रह्महा शा. ३५. १७
ब्रह्मा आ. १.३०; ६.५; आर. १८७. ४०; उ. ९५.२
ब्रह्माग्निषोमीय शा. ३२९.५०
ब्रह्मा (मेरुपर्वतवासी) अ. ९२.७
ब्रह्माश्रम शा. ६६.१०,११
(प्रव्रजितानां ज्ञानभूमिः) अ. १०.५
ब्रह्मास्त्र श. ६१. १९; शा. २. १३
ब्राह्मण आ. १.१०८, २०१; ३.१३२; ११.१३; २४.३; ६८.५६; १२८. ८; १६५. २७; १६८.९; १७९.११–१३ १८१.३५; स. ५.८६; १९.४२; ३९.६; ७२.२० आर. २.४; २५.१५; २७. १४–२०; ४७.६; ९४.५; १७७.१६.१७–२१, २५; १८९.१८; २३८.२४; २८७.४–६; उ. २९.४६; ३३.७५, ७६; ४३.२९; १३७.२०; भी. ११६.३३ क. ३०. ८; शा. ३. २५; ३९.३८; ७३.६; १३०.२ १३३. १८; १५४. ७; १८१. १; १९२. ४५; २१८.१३; ३१२.१४-१९; ३२९. १३; अ. ८. १२; ९८. ९

(अवध्य) आ. १८०.९
(अविद्वानपि पूज्यः) अ. १३६.२१
(आरण्यक-प्रव्रजित) शा. १३३.८
(ऋषि) आर. २७.८; १९१.३, ४; ९; १९०.५२
(कः) आर. १९७.३१–३८
(कर्म) शा. ६३.१–२
काम्या आर. १८६.१२८
(कोपित) आ. ७६. २४
(कृषि-गोरक्ष) अ. ३३.११
(क्रुद्ध) उ. ४०.७
-क्षत्रिय उ. १८०. २५
(क्षत्रियजातः) आ. १२७. १४
-क्षत्रिय-योग अ. १३७. १२
(क्षत्रियाद्वरः) अ. १४१.३०
(गोभक्ष) उ. ३५.२०
-चेष्टा शा. २३.९
(जाति परिवर्तन) आ. ६५.२९
(तपसा) श. ३९. २९
(तीर्थ) अ. ९.२४
(तपः श्रुतयोनिभिः) अ. १२२. ७
(दम) सौ. ३.१९
-धर्म शा. १४. १५
-धर्म (दम, स्वाध्याय, अध्यापन) शा. ६०. ९

'भ'

युद्धाचार शा. १०१. २४
युद्धातिथ्य क. १२. १९
युद्धाभिनन्दी भी. १. ४.
युद्धोचितवस्त्र भी. १६. ३७
युधाजीव आर. १८३. २५
युधिष्ठिर (ऐश्वर्य) वि. ६५. ८-१९
युवा आ. १७८. १–४
यूप आ. १. १६९; स. ३. ११; आर. . १०९. १६
योग आ. ७. ६; ६०. २६, ४२; १२३. १३, १४, ४२; १४५. २५; १९६. ६; स. १२. २३; ५०. १७; आर. २. १४, ७६; ३. १४; ३८. २७, ४५; ६४. ६; ८०. १२६; १०४. १०; १२९. ७; १५९. १५; १७८. ४३; १८१. ३६; १८४. २२; १८७. २५; २०३. ४४; २९२. २८; २९८. ४; उ. ३४. ३७; ३९. ४३; ४७. ४४; ६०. २७; ६८. ४; भी. २४. ३९; २६. १; २८. १२; ३१. ५; ३२. १८; ११४. ११२; द्रो. ८६. ३३; १६५. ३९; क. ६. ४५; ७. २; श. १. १२; ३०. १०; ४३. ३६; ४८. २२–२३; ४९. ५–६, २२, ६१; शा. ४७. १; ६६. ३३; १२५. ३३; १७८. १६; १९३. २२; २०३. १; ३१०. १३
(आकाशप्रवेश) शा. ३१९. ९
(आत्मप्रवेश) आश्व. ३०. ३८
(उद्योग) शा. ११३. १७
(उपाय) द्रो. ३४. १९; शा. १६१. २१
-क्षेम आ. ७५. ९; उ. १२३. २३; भी. ३१. २२
-गति शा. ३२६. ६५
-ज्ञ द्रो. ७३. ४३
-ज्ञान शा. ३०४. १
-तन्त्र शा. २०८. २०
(तपस्) आ. ९४. ११
(दिव्य) आर. ३२. १२
-धारणा भी. ३०. १२
-निद्रा शा. ४७. ३९
(निवृत्तपथ) शा. ३२७. ६६
(परमगति) शा. ३१८. ५२
(परमसुख) आश्व. ३०. २९
(पुत्रार्थ) शा. ३१०. २१
(प्रभाव) उ. ६८. २१
(प्रवृत्तिलक्षण) आश्व ४३. २४
-वन्ध शा. ३०८. १७
-वल आर. १९२. २८; भी. १६. ५; ३०. १०; श. ४३. १६; शा. ३०४. २; अ. ५४. २-१८, २०
-वल (अपरस्येन्द्रियाणां वन्धनम्) अ. ४१. ११
-वल (परकायप्रवेश) अ. ४०. ४६, ५६
-भ्रष्ट भी. २८. ४१
-माया भी. २९. २५
-मुक्त द्रो. १६५. ४४
-मूर्तिधर आ. ११४. ३

'र'

रथ आ. ८८. १२; २१२. ३ श. २४
 १५; २७. ४४ शा. ३८. ३२
 २१३. ४१
(अच्छेद्य) क. २२. ४८
(अष्टचक्र) द्रो. १३१. २८; १४२.
 ३४
(कल्पक) द्रो. ८७. ४६
(क्रीडार्थक) अ. ५३. २७
-घोष आर. ७१. ४
(चतुरश्व) उ. ५७. १३; भी. ४९.
 ६; द्रो. १२०. ७४; १२२.
 ६१
(चतुर्युज्) उ. १५२. १०
(नगराकार) द्रो. १६२ ४३ अ. ३१.
 ३६ आश्र. ३०. ३
-नीड द्रो. १४८. ५
(पञ्चगुण) द्रो. ८७. ४७
-भूमि शा. १०१. १९
(मोयामय) आर. ४३. ७-८
(सांग्रामिक) अ. ५३. २७
-रचना द्रो. १५०. ११, १२; १२२.
 ७७-८१
(रचनोपकरण) द्रो. ३५. ३१, ३२
-वंश उ. १६३. ४; भी. ९८. २४
(वीरकोटि) उ. १६४. ७
-शक्ति ६. सौ. १२
-सिंह उ. १६३. २, भी. ४८. ३२
रथोदार उ. १६३. ९
रन्ध्रान्वेषी अ. २. ४७
रमणभूमि उ. ११६. १८, १९
रशना अ. २४. ४०

रस आ. ९०. ६५; आर. ३५. ७; अ.
 ९४. १६
-पाचक वि. ३९. ५
-योग अ. ११७. २
-वेग शा. १५२.९
(सिद्धान्त) आश्व. २१. १७
रसातल उ. १००. १५
रसायन-प्रयोग शा. ३०७. २
रसाला आश्व. ९१. ३७
राक्षस आ. १४०. १-६; स. ४४. ८
 आर. ४५. ३६
(= असुर) आ. १४८. ४
(जनपदेश) आ. १४८. ३
(पुरुषाद) आर. २६५. २८
(ब्राह्मणद्वेषी) शा. ४२. १७
(ब्राह्मणपूजक) शा. १६५. १०
(भीमपुत्र) आर. १४४. २५
(मनुष्याद) शा. ११६. १७; आ.
 १३९. १, १७, २६
(यज्ञमुपजीवन्ति) शा. ७३. २१
-योनि (नर) स. २८. ४५
(रक्तप) श. ४२. ६
-विवाह आ. २११. २२
-सत्र आ. १७२. २, ३
राक्षसी आ. १४३. ३२ स. १७. २
राङ्कवाजिन उ. ८८. १४
राजकन्यानर्तन वि. १०. १०
राजकन्या-शुल्क उ, ११३. १३
राजकर्म स. ५. ७-९९, १०३-११३;
 शा. २३. १०-१४; ११३.
 १

'ल'

'ह'

पर्व-संक्षिप्तिका

१. आदि	आ.
२. सभा	स.
३. आरण्यक	आर.
४. विराट	वि.
५. उद्योग	उ.
६. भीष्म	भी.
७. द्रोण	द्रो.
८. कर्ण	क.
९. शल्य	श.
१०. सौप्तिक	सौ.
११. स्त्री	स्त्री.
१२. शान्ति	शा.
१३. अनुशासन	अ.
१४. आश्वमेधिक	आश्व.
१५. आश्रमवासिक	आश्र.
१६. मौसल	मौ.
१७. महाप्रास्थानिक	महा.
१८. स्वर्गारोहण	स्व.



